

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 696

बुधवार, 7 फरवरी, 2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

ग्लेशियर झीलों के फटने के कारण बाढ़

†696. श्री श्रीधर कोटागिरी :
डॉ. संजय जायसवाल:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने देश में ग्लेशियर झीलों के फटने के कारण आने वाली बाढ़ की संभावना से संबंधित कोई पूर्व चेतावनी प्रणाली विकसित की है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
- (घ) क्या सरकार ने हिमालय के ग्लेशियरों से उत्पन्न खतरों से निपटने के लिए व्यापक जोखिम मूल्यांकन किया है, संवेदनशील क्षेत्रों की मैपिंग की है और बुनियादी ढांचे का विकास किया है;
- (ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (च) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रीजीजू)

(क) से (ग) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने स्विट्स डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, भारत में स्विट्जरलैंड के दूतावास के सहयोग से वर्ष 2020 में ग्लेशियर झीलों के फटने के प्रबंधन के लिए दिशा निर्देश जारी किए, जिसमें पूर्व चेतावनी प्रणाली की स्थापना के सभी पहलुओं का विवरण शामिल है। 16 सितंबर, 2023 को सिक्किम में दो अधिक जोखिम वाली ग्लेशियर झीलों, दक्षिण लहोनक और शाको चो पर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के नेतृत्व वाले दो बहु-एजेंसी अभियानों के सदस्यों द्वारा दो सौर ऊर्जा संचालित, टिवन-कैमरा, स्वचालित मौसम स्टेशन (एडब्ल्यूएस) स्थापित किए गए। इसके अतिरिक्त, अभियान के दौरान सम्पूर्ण पूर्व चेतावनी प्रणाली के लिए सेंसर की एक श्रृंखला स्थापित करने के संभावित स्थानों की पहचान की गई।

(घ) से (च) नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर, हैदराबाद ने 2012 से 2016 के दौरान उपग्रह डेटा का उपयोग करके 50 हेक्टेयर से अधिक आकार की ग्लेशियर झीलों और जलाशयों की सूची बनाई। तत्पश्चात, केंद्रीय जल आयोग उपग्रह डेटा का उपयोग करके ग्लेशियर झीलों (>50 हेक्टेयर) की निगरानी का कार्य कर रहा है। इसके अलावा, नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर ने भारतीय नदी घाटियों के हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर झीलों का GLOF जोखिम मूल्यांकन किया है। इस गतिविधि के भाग के रूप में, रिसोर्ससैट-2 (RS-2) लीनियर इमेजिंग सेल्फ स्कैनिंग सेंसर-IV (LISS- IV) से उच्च विभेदन उपग्रह डेटा का उपयोग करके भारतीय हिमालयी नदियों के संपूर्ण जल ग्रहण क्षेत्रों के लिए 0.25 हेक्टेयर से अधिक आकार की 28043 ग्लेशियर झीलों का मानचित्रण किया गया है। सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों और भारतीय हिमालयी नदी घाटियों के बेसिन-वार ग्लेशियर एटलस तैयार कर प्रकाशित किए गए।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय वर्ष 2013 से अपने स्वायत्त संस्थान, राष्ट्रीय ध्रुवीय और समुद्री अनुसंधान केंद्र के माध्यम से, चंद्रा बेसिन में दो प्रो-ग्लेशियल झीलों की निगरानी और वैज्ञानिक अनुसंधान कर रहा है।
